डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

स्वर्ण प्रदायक

तारा साधना

एस-सीरिज

अरविन्द प्रकाशन,
जोधपुर

Download Book ~ https://www.hindibook.in

रहस्य रोमांच

जीवन को झकझोर कर रख देने वाली

पुस्तक श्रंखला

में उपलब्ध हैं

एस-सीरिज

अद्‌भुत और सांस रोक कर पढ़ने योग्य ये छः पुस्तकें

प्रथम सीरिज

- तांत्रिक त्रिजटा अघोरी
- भुवनेश्वरी साधना
- अप्सरा साधना सिद्धि
- सिद्धाश्रम
- मैं बाहें फैलाए खड़ा हूं
- हंसा! उड़हूं गगन की ओर

प्रथम सीरिज ३०/- सेट

द्वितीय सीरिज ४०/- सेट

द्वितीय सीरिज

- सौन्दर्य
- तारा साधना
- जगदम्बा साधना
- तंत्र साधनाएं
- स्वर्ण सिद्धि
- उर्वशी साधना
- शिव साधना
- हिप्नोटिज्म

अरविन्द प्रकाशन,

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर(राज.)

टेली-०२९१-३२२०६

तारा महाविद्या साधना

डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

अरविन्द प्रकाशन

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी

जोधपुर (राजस्थान) - ३४२००१

फोनः ०२९१-३२२०६

Download Book ~ https://www.hindibook.in

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : अरविन्द प्रकाशन
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर (राज.)-३४२००१,फोन:०२९१-३२२०९
संस्करण : १९९३
मूल्य : ५.०० (पांच रुपये)
मुद्रक : ताज प्रेस, ए.-३५/४,मायापुरी,दिल्ली

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका से साभार लेख

पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक ,मुद्रक या संपादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पुस्तिकामें प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पुस्तिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बारे में, असली या नकली के बारे में, अथवा प्रभाव या न प्रभाव होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पुस्तिका कार्यालय से मंगवायें, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद - विवाद मान्य नहीं होगा। पुस्तिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ आदि की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई ऐसी उपासना जप या मंत्र प्रयोग न करे जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पुस्तिकामें प्रकाशित एवं विज्ञापित आयुर्वेदिक औषधियों का प्रयोग पाठक अपनी जिम्मेवारी पर ही करें। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है कि वह संबंधित लाभ तुरंत प्राप्त कर सके, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। किसी भी सम्बंध में किसी प्रकार की कोई आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी । गुरुदेव या पुस्तिका परिवार इस सम्बंध में किसी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे। ★

अनुक्रमणिका

क्रम	शीर्षक	पृष्ठ
१.	तांत्रिकों का आराध्य स्थल तारापीठ	०८
२.	तारा यंत्र तथा मंत्र	१६
३.	स्वर्ण प्रदायक तारा साधना	१९
४.	तारा की नौ कलाएं	२३
५.	भगवती तारा की दुर्लभ साधना विधि	२५
६.	तारा साधना मेरे जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि	३४
७.	तारा महाविद्या साधना (कलियुग में सर्वोच्च धन प्रदायक साधना	४०

Download Book ~ https://www.hindibook.in

दो शब्द

भारतीय ज्ञान-विज्ञान अपनी श्रेष्ठता और गहनता के कारण विश्व-विख्यात रहा, और भारतीय विद्याओं की महत्ता आज के वैज्ञानिक युग में भी दिन-प्रतिदिन स्पष्ट हो रही है किंतु यह खेद का विषय है कि यही ज्ञान-विज्ञान अपनी ही धरती पर उपेक्षित और व्यंग की दृष्टि से देखा जाता है, दृष्टिकोण में आए परिवर्तन के साथ-साथ भारतीय ज्ञान की दुरुहता भी एक प्रमुख कारण रही है क्योंकि इसे अपनी ही सम्पत्ति बनाए रखने के प्रयास में न केवल तोड़-मरोड़ की गई अपितु यह नीरस, जटिल और अस्पष्ट भी हो गया तथा समाज ऐसे साहित्य को भय-मिश्रित जिज्ञासा से देखने लग गया।

इस खेद-जनक स्थिति का समापन करने के लिए हमने एक प्रयास किया कि ज्ञान और साधना की सरस ढंग से प्रस्तुति हो और अरविंद प्रकाशन के द्वारा "एस सीरीज" में रोचक, तथ्यपरक व ज्ञान-वर्धक साहित्य का प्रकाशन आरम्भ किया। इसके प्रथम सेट के अंतर्गत् छह पुस्तकें प्रकाशित की गईं- **तांत्रिक त्रिजटा अघोरी, भुवनेश्वरी साधना, हंसा उड़हूं गगन की ओर, मैं बांहे फैलाए खड़ा हूं, सिद्धाश्रम, एवं अप्सरा साधना एवं सिद्धि**। इस सेट की प्रत्येक पुस्तक अपने ढंग की विशिष्ट व रोचक रही। उदाहरण के लिए पाठक वर्ग ने पहली बार ही त्रिजटा अघोरी जैसे प्रबल व्यक्तित्व का परिचय पाया और 'सिद्धाश्रम' के नाम से विख्यात सिद्ध स्थली की प्रामाणिक जानकारी ली। पाठक वर्ग ने इस सेट का उत्साहपूर्ण ढंग से स्वागत किया और साधनात्मक साहित्य के क्षेत्र में व्याप्त जड़ता और नीरसता समाप्त करने का हमारा प्रयास सफल रहा। इन सभी पुस्तकों का आधार पूज्यपाद गुरुदेव से प्राप्त सूत्र एवं उनके गृहस्थ व सन्यस्त शिष्यों के प्रामाणिक अनुभव रहे। अपने-आप में मौलिक व अनुभूत तथ्यों पर आधारित होने के कारण ही ये पुस्तकें जन मानस को गहरे तक जाकर न केवल छू सकीं वरन् उन्हें साधना के लिए भी नई चेतना प्रदान करने में समर्थ रहीं। ऐसा सब कुछ संभव होने में हमें कोई आश्चर्य नहीं रहा क्योंकि न केवल इन पुस्तकों के वरन् इन सभी शिष्यों के पीछे जो चैतन्य व्यक्तित्व है, जिनके ज्ञान और निर्देशन में इन सभी साधकों ने साधनाएं सम्पन्न कर सिद्धि पायी है, और अनेक रोमांचक अनुभव प्राप्त किए हैं (और जो इन पुस्तकों का आधार बने)

Download Book ~ https://www.hindibook.in

उनका नाम है **डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली जी** जो अपने सन्यासी शिष्यों के मध्य परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी के रूप में विख्यात हैं। एक ही व्यक्तित्व में ज्ञान की अनेक धाराएं समाहित देख कर वास्तव में आश्चर्यचकित रह जाना पड़ता है। पूज्यपाद गुरुदेव के व्यक्तित्व से जुड़ी सैकड़ों-हजारों, घटनाओं के आधार पर यदि उनके शिष्यों के अनुभव एकत्र किए जाएं तो वह एक विशाल ग्रंथ का आकार ले लेगा।

वर्तमान में हमने इसी विशाल ज्ञान-भंडार में से पाठकों की रुचि व हित को ध्यान में रखकर इस द्वितीय सेट का निर्माण किया है। जिसके अन्तर्गत् **जगदम्बा साधना, सौंदर्य, शिव साधना, उर्वशी, स्वर्ण सिद्धि, तारा साधना, तंत्र साधना एवं हिप्नोटिज्म,** शीर्षक से आठ पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं। अपने लघु-कलेवर में भी प्रत्येक पुस्तक सम्बन्धित विषय से पूर्ण ज्ञान समेटे ही है साथ ही अत्यंत सहज और बोधगम्य शैली में--

''जगदम्बा साधना'' में भगवती दुर्गा से सम्बन्धित शक्ति साधनाएं गोपनीय रहस्यों के साथ प्रकाशित की गई हैं, जिनसे तो शास्त्र के ज्ञाता भी अनभिज्ञ होगें, **''सौन्दर्य''** के अन्तर्गत् जीवन में

सौन्दर्य की आवश्यकता और प्राप्ति का प्रामाणिक विवरण **''शिव साधना''** के अन्तर्गत् भगवान शिव से सम्बन्धित अत्यंत दुर्लभ साधनाएं, **''उर्वशी''** के अन्तर्गत् अप्सरा का पूर्ण विवरण व साधना, **''स्वर्ण सिद्धि''** के अन्तर्गत् स्वर्ण निर्माण से सम्बन्धित गोपनीय शास्त्रों का प्रकाशन, **''तारा साधना''** के अन्तर्गत् धन प्राप्ति की अचूक साधना **''तंत्र साधना''** के अन्तर्गत् जीवन को संवारने के कई दुर्लभ प्रयोग तथा **'हिप्नोटिजम''** के अन्तर्गत् सम्मोहन विज्ञान के सफल सूत्र पूर्ण प्रामाणिकता से वर्णित किए गए हैं।

हमें आशा है कि प्रथम सेट की ही भांति यह द्वितीय सेट भी पाठकों की रुचि के अनुकूल तथा जीवन में लाभ प्रदान करने में समर्थ होगा।

-- प्रकाशक

Download Book ~ https://www.hindibook.in

तांत्रिकों की आराध्य स्थल

तारापीठ

संसार की श्रेष्ठ साधनाओं और विद्याओं में से तंत्र एक प्रमुख साधना और विद्या है, तंत्र ही एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति प्रकृति में परिवर्तन कर उसे अपने अनुकूल बना सकता है।

इनमें भी कुछ स्थल विशेष प्राणश्चेतना युक्त बन जाते हैं, और इन सिद्ध पीठों में से ही एक पीठ है-तारा पीठ, जो कि तांत्रिकों का तीर्थ है, आराधकों का आराध्य स्थल है, औघड़ों का आधार है।

कई वर्षों से मेरे मन में यह साध थी कि मैं इस विश्वविख्यात तारा पीठ के दर्शन करूं, और इसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं एवं उपलब्धियों को अपनी आंखों से देखूं। यह स्थान पश्चिमी बंगाल के **"वीर भूम"** जिले में स्थित है, यदि

बिहार के रास्ते से जाएं, तो संथाल परगना के दुमका शहर से लगभग ६० मील दूर पक्की सड़क के किनारे बसा हुआ यह एक कस्बा है, जो कि इसी सिद्ध पीठ के कारण तांत्रिकों में चर्चा का विषय और साधकों का आराध्य स्थल बन गया है।

इस तारा पीठ की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहां की हवा में भी तंत्र है, जब व्यक्ति इस सिद्ध पीठ की सीमा में घुसता है, तो उसे एक विचित्र सी सनसनाहट अनुभव होती है, ऐसा लगता है, जैसे वह एक विचित्र लोक में आ गया है, उसकी चेतना और उसकी भावनाओं में आश्चर्यजनक रूप से परिवर्तन आ जाता है, और मन में एक ऐसी भावना व्याप्त हो जाती है कि काश! मैं तंत्र जानता तो इस क्षेत्र में कुछ साधनाएं कर जीवन धन्य कर लेता।

संसार की श्रेष्ठ साधनाओं में दस महाविद्या साधना है, इसमें भी **"तारा साधना"** एक प्रमुख और शीघ्र फलदायक साधना है, कहते हैं कि तारा के साधक को प्रातः उठने पर सिरहाने नित्य दो तोला स्वर्ण प्राप्त होता है, यह स्वर्ण कहाँ से आता है? उसके सिरहाने कौन लाकर रखता है? इसका कुछ भी पता नहीं चलता, परन्तु इस तथ्य का अनुभव एक - दो नहीं दसियों तारा-साधकों को हुआ है, और आज भी मैं ऐसे कई साधुओं, सन्यासियों और गृहस्थ व्यक्तियों को जानता हूं, जिन्होंने तारा साधना सिद्ध की है, भगवती तारा जिनके सामने

Download Book ~ https://www.hindibook.in

साक्षात् स्पष्ट हुई है, और वे नित्य दो तोला स्वर्ण इससे प्राप्त करते हैं।

जब मैं इस तारा पीठ को देखने के लिए जा रहा था तो मेरे मन में ऐसे कई संकल्प-विकल्प उठ रहे थे, मैंने अपने जीवन में ही तारा साधना पूज्य गुरुदेव श्रीमाली जी के चरणों में बैठकर सिद्ध कर ली थी, और **मेरा स्वयं का यह अनुभव रहा है कि तारा साधना सिद्ध करने के बाद जीवन में आर्थिक दृष्टि से किसी भी प्रकार का अभाव रह ही नहीं सकता।**

जब मैं इस स्थान पर पहुंचा तो मेरा सारा शरीर पुलकित हो रहा था, मैं अपनी आराध्य तारा के दर्शन करना चाहता था, मेरे मन में विचार उठ रहे थे कि वह तांत्रिक **"वामा क्षेपा"** कैसा होगा जो नित्य अपने हाथों से मां तारा को भोजन कराता था? यह तारा पीठ सिद्ध पीठ है, मन्दिर के बीच में भगवती तारा की सुन्दर मूर्ति स्थित है, इसके अगल-बगल के मंदिर हनुमान, शिव आदि के हैं, यह सिद्ध पीठ द्वारिका नदी के किनारे श्मशान के पास अवस्थित है, जहां तांत्रिक वामाक्षेपा की लाश दफन हुई थी।

वामाक्षेपा एक प्रसिद्ध और सिद्ध तांत्रिक था, जो मां भगवती का पूर्ण समर्पित भाव से आराधक था, उसी ने इस मंदिर की अपने हाथों से स्थापना की थी, एक दिन जब बरसात के दिनों में द्वारिका नदी अपने पूरे उफान पर थी, तब किसी ने

वामाक्षेपा को समाचार दिया कि उसकी मां की मृत्यु हो चुकी है, लोगों के मना करते-करते भी वामाक्षेपा उस धधकती, उफनती नदी में कूद पड़ा और नदी के उस किनारे जाकर गांव से अपनी मां के शव को पीठ पर डाल पुनः उसी फुफकारती नदी में कूद, इस किनारे आ पहुंचा था, और तभी लोगों ने उसकी सिद्धि का प्रथम परिचय पाया था, नदी के इस किनारे पर ही वामाक्षेपा के मां की चिता प्रज्वलित हुई थी, और उसके काफी समय बाद वामाक्षेपा की सुन्दर समाधि भी इसी श्मशान के द्वार पर बनी।

यह जाग्रत और चैतन्य श्मशान है, यहां नित्य एक मुर्दा जलने के लिए आता ही है, जब मैं इस मंदिर में पहुंचा तो कई भक्त श्मशान घाट की तरफ टकटकी लगाये खड़े थे, तभी सुना कि "जब तक कोई शव जलाने श्मशान में नहीं आता, तब तक मां तारा को भोग नहीं लगता" तभी **एक शव जलाने के लिए श्मशान की तरफ आता दिखाई दिया, और मंदिर के घंटे- घड़ियाल तुमुल नाद से बज उठे, इधर उस मुर्दे की चिता में अग्नि दी गई और इधर भोग का थाल मां तारा के सामने सज गया।**

श्मशान में स्थित यह तारा मंदिर एक भव्य और प्रभावयुक्त तीर्थ स्थल है, जिसके पीछे छोटी-छोटी झोपड़ियों में सैकड़ों साधक साधना में रत हैं, उन

Download Book ~ https://www.hindibook.in

झोपिड़यों की सजावट भी विचित्र है, कुछ झोपड़ियों के प्रवेश द्वार पर मानव की हड्डियों के बन्दनवार सजे हुए हैं, तो कुछ कुटियों का निर्माण ही नरमुण्डों से हुआ है, इनकी दीवारों पर, छतों पर सैकड़ों प्रकार की हड्डियां और मुण्ड लटके हुए दिखाई देंगे, पर ये सब भयानकता उत्पन्न नहीं करते, अपितु इनको देखने पर मन में जीवन की निस्सारता स्पष्ट होती है, मन में यही आता है कि इस सुन्दर और सजीली देह का अन्त यही होना है, जिस **धन और वैभव के लिए व्यक्ति पागल है, उसका हस्र इतना ही है, कि वह सब कुछ छोड़-छाड़कर इसी श्मशान में अपने- आपको लीन कर देगा, उसके साथ धन, वैभव, सम्पदा या कुछ भी भौतिक जगत-से नहीं जाएगा,** इस श्मशान में आकर पहली बार मन को सही अर्थों में शांति मिलती है, संसार की निस्सारता का पूरा-पूरा पाठ यहीं पर प्राप्त होता है।

मैं श्मशान में बनी हुई इन कुटियों को और इसके बाहर विचरण करते हुए तांत्रिक साधकों को देखता हुआ, तारा मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुंच गया, इसी मंदिर में प्रतिष्ठित है -- वामाक्षेपा से पूजित उसकी उपास्य तारा देवी की मूर्ति, जिसकी भव्यता बेमिसाल है, कंधों तक लटके हुए कृत्रिम केश-गुच्छ और सोने से बने हुए सिरस्त्राण से मण्डित त्रिकोण मुखाकार तारा विग्रह, मन को बांध कर रखने वाली भव्य तारा की मूर्ति।

मेरे दोनों हाथ स्वतः ही भगवती तारा के सामने जुड़ गये, और होठों से तारा ध्यान उच्चरित होने लगा --

प्रत्यालीढ़ पदार्पितांघ्रिशव हृद घोराट्ट हासा परा
खड्गेन्दीवरकत्रिखर्पर्रभुजा हुंकार बीजोद्भवा।
खर्व्वा नील विशाल पिंगल जटा जूटै क नागैर्यूर्युता
जाड्यन्नयस्य कपाल कर्तृ जगतां हन्त्युग्र तारा स्वयम्।।

ऐसा लगा कि जैसे तारा साक्षात् रूप से मेरी आंखों के सामने साकार हो गई हो, एक क्षण के लिए मैं सब कुछ भुला बैठा, न तो मुझे अपने अस्तित्व का भान रहा, और न इस विश्व का ही, इस चराचर जगत में या तो मैं था, या मेरी बन्द आंखों के सामने साक्षात् मां तारा का भव्य विग्रह। इसी प्रकार तो वामाक्षेपा मां तारा को देखकर पुलकित होता होगा, मां के प्यार में पागल वह अलमस्त निर्द्वन्द, निर्मुक्त, औघड़ अपने हाथों से भोजन का कौर मां के मुंह में देता और मां अपना मुंह खोलकर उस ग्रास को स्वीकार करती, कभी-कभी मां ग्रास लेने में विलम्ब करती तो यह पागल औघड़ उस देवी के शरीर पर हाथ छोड़ बैठता -- बोलता "तुम्हीं जानो जे आमि तोमाय बिना खाई नय, तखन

Download Book ~ https://www.hindibook.in

बिलम्ब केनो कोर छो (तुम जानती हो कि मैं तुम्हारे खाए बिना कुछ भी नहीं खाता तब फिर क्यों देर करती हो?)।

वामाक्षेपा आज से लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व तारा पीठ के पास के ही एक गांव में पैदा हुए थे, वे परमहंस रामकृष्ण के समकालीन ही नहीं थे, अपितु उनसे एक साल बड़े भी थे, ७७ वर्ष की आयु में वामाक्षेपा ने योग बल से अपने भौतिक शरीर को छोड़ा था, पर दूसरे ही दिन वे साकार रूप में इस मंदिर में लोगों को दिखाई देने लग गए थे, तब से आज तक इस मंदिर के अणु-अणु में इस औघड़ की उपस्थिति स्पष्ट अनुभव होती है, ऐसा लगता है, कि इस मंदिर की समस्त गतिविधियों का संचालन अप्रत्यक्ष रूप से यही साधक कर रहा हो।

आज भी इस मन्दिर के नियम वही हैं, जो वामाक्षेपा निर्धारित कर गए थे, सारी रात देवी की पूजा होती रहती है, रात्रि पर्यन्त साधक और पुजारी मां तारा की अर्चना, आराधाना करते रहते हैं, और भक्तगण दर्शन कर अपने आपको कृत-कृत्य अनुभव करते रहते हैं।

मैं एक रात नहीं तीन रात तक मंदिर की पूजा

अर्चना में भाग लेता रहा, नींद का दूर-दूर तक नामो-निशान नहीं था, और **हर क्षण ऐसा अनुभव हो रहा था कि मां तारा का परम गोपनीय और शीघ्र प्रभावोत्पादक मंत्र "ऐं ओं ह्रीं क्रीं हुं फट्" हवा में गूंज रहा हो, यही तो वह मंत्र है, जो तारा का प्रिय है,** इसी मंत्र से तो साधक नित्य स्वर्ण प्राप्त करते हैं, यह मंत्र और इसकी ध्वनि मंदिर के कण-कण में गुंजरित होती हुई अनुभव होती है।

वस्तुतः यह संसार का श्रेष्ठ भव्य और आकर्षक सिद्ध प्रीठ है, मां तारा का ऐसा चैतन्य जाग्रत और प्राणवान सिद्ध पीठ अन्यत्र उपलब्ध नहीं, इसीलिए तो इसे तांत्रिकों और साधकों का स्वर्ग तथा गृहस्थ व्यक्तियों का आधार कहा गया है।

★★★

Download Book ~ https://www.hindibook.in

तारा यंत्र

जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण उन्नति प्राप्त करने के लिए मनुष्य को वे सभी साधन उपयोग में लाने चाहिए, जो कि समयोचित और समाजोचित हों, यह हम भारतवासियों का सौभाग्य है, कि हमारे जीवन में कई प्रकार की विद्याएं जीवित हैं, और हमारे पूर्वजों ने इन विद्याओं का उपयोग कर अपने जीवन को सभी दृष्टियों से अनुकूल एवं सुखमय बनाया था।

यंत्र एक विशेष प्रभावयुक्त अग्निपुंज है, इनका निर्माण इस प्रकार से किया गया है, कि वे सभी लकीरें मिलकर एक विशेष प्रभाव की सृष्टि करें, और उनसे मनोवांछित सफलता प्राप्त हो, इस प्रकार के यंत्रों का निर्माण विशेष समय में किया जाना चाहिए और यंत्र निर्माण के बाद उसमें प्राण- प्रतिष्ठा होनी चाहिए, जिससे कि वे यंत्र पूर्णतः प्रभावयुक्त बन सकें।

इस प्रकार के प्रभावयुक्त यंत्र की नित्य पूजा आवश्यक नहीं है, केवल मात्र घर में रखने से ही वे अनुकूल फल देने में समर्थ हो जाते हैं ये हमारे पूर्वजों की तरफ से हम लोगों को वरदान स्वरूप है--

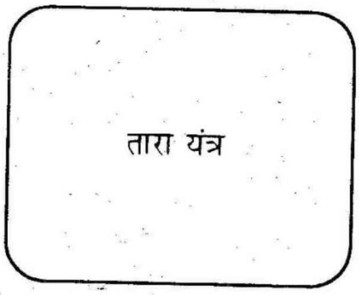

★★★

Download Book ~ https://www.hindibook.in

तारा मंत्र

तारा देवी महाविद्या साधना मानी गई है, और कहते हैं कि तारा यंत्र घर में स्थापित होने पर आकस्मिक धन प्राप्ति के अवसर बढ़ जाते हैं, यों भी सुना है कि जो साधक तारा साधना सम्पन्न कर लेता है, उसे तारा देवी नित्य दो तोला स्वर्ण प्रदान करती है, वस्तुतः तारा साधना ने जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति में विशेष रूप से सहायक है।

इस यंत्र का निर्माण ताम्र पत्र पर होता है, और बुधवार को प्रातः इस यंत्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर उसके सामने तेल का दीपक लगाकर निम्न मंत्र की एक माला (स्फटिक माला) का जप करना चाहिए।

मंत्र

ऐं ओं ह्रीं क्रीं हुँ फट्

★★★

स्वर्ण प्रदायक

तारा साधना

यह दस महाविद्याओं में से एक प्रमुख महाविद्या है, और संसार की अद्वितीय धनदायक देवी है, हजारों वर्षों से ऋषि और हमारे पूर्वज तारा साधना सम्पन्न करते आए हैं, यदि निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न किया जाए तो निश्चय ही इस साधना में सफलता प्राप्त होती है, और मनोवांछित वरदान प्राप्त होता है।

इस साधना की विशेषता यह है कि साधना सम्पन्न होने पर भगवती तारा स्वयं ही प्रत्यक्ष दर्शन देती है, और साधक के सिरहाने नित्य एक या दो तोला स्वर्ण रख देती है, आप स्वयं कल्पना कर सकते हैं कि आज के समय में एक या दो तोला स्वर्ण का मूल्य कितना अधिक होता है, और फिर वह नित्य मिले तो उसके जीवन में

Download Book ~ https://www.hindibook.in

क्या कमी हो सकती है?

इसके साथ ही साथ इस साधना को सम्पन्न करने पर महाविद्या सिद्ध हो जाती है, और भौतिक दृष्टि से अपने जीवन में वह जो कुछ भी चाहता है, वह उसे प्राप्त हो जाता है।

साधना रहस्य

यह साधना किसी भी महीने प्रारम्भ की जा सकती है, मेरी राय में यदि रविवार की रात्रि से यह साधना प्रारम्भ की जाए तो ज्यादा अनुकूल रहती है तथा शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

इसके लिए निम्न उपकरण चाहिए -

१. जल पात्र
२. कुंकुम (रोली)
३. चावल
४. आधा मीटर लम्बा- चौड़ा लाल वस्त्र
५. मंत्र सिद्ध प्राण- प्रतिष्ठायुक्त तारा यंत्र एवं चित्र
६. दो तोला गंधक का चूर्ण
७. तारा वत्स नाभ।

साधना विधि

रविवार की रात्रि को स्नान कर लाल धोती पहिन कर लाल आसन पर दक्षिण की ओर मुंह कर बैठ जाएं सामने लकड़ी के पट्टे पर लाल वस्त्र बिछा दें और सामने तारा यंत्र व चित्र स्थापित कर दें, फिर सामने गंधक के पाउडर की सात ढेरियां लगा दें, और चौथी ढेरी पर तेल का दीपक स्थापित कर दें, इस दीपक में किसी भी प्रकार के तेल का प्रयोग हो सकता है, तेल के सामने ही तारा वत्स नाभ को स्थापित कर दें, और उसके आगे जल पात्र कुंकुम अगरबत्ती आदि रख दें।

सर्वप्रथम जल से यंत्र व चित्र को धोकर रख दें, उस पर अक्षत चढ़ा दें, फिर तारा वत्स नाभ को जल से धो कर पोंछ कर उस पर माचिस की शलाका से या किसी भी शलाका से कुंकुम के द्वारा निम्न मंत्र लिख दें

ॐ तारा तूरी स्वाहा। ।

इसके बाद दीपक जला दें, अगरबत्ती लगा दें, और मूंगे की माला से मंत्र जप प्रारम्भ करें, इसमें नित्य ६० माला मंत्र जप करना अनिवार्य है तथा यह मात्र ६ दिनों की साधना है, यह साधना नित्य रात्रि में ही सम्पन्न

Download Book ~ https://www.hindibook.in

की जाती है, जब छठे दिन भगवती तारा के प्रत्यक्ष, दर्शन हों तो उनसे हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि वह भौतिक जीवन से सम्बन्धित सभी इच्छाएं पूरी करे और नित्य स्वर्ण प्रदान करे।

इसके बाद तारा यंत्र व चित्र पूजा स्थान में रख दें, और तारा वत्स नाभ को उसी लाल वस्त्र में लपेट कर घर के किसी सुरक्षित स्थान में रख दें, इस प्रकार करने से यह साधना सिद्ध हो जाती है तथा जीवन में वह सब कुछ प्राप्त होता है जो साधक की इच्छा होती है।

इसमें निम्न गोपनीय मंत्र का प्रयोग किया जाता है -

मंत्र

ॐ ऐं क ह ल ह्रीं ऐं तारायै सिद्धिं देहि देहि ॐ ऐं क ह ल ह्रीं ऐं नमः

वस्तुतः यह साधना अपने- आप में चमत्कार ही है, और जो इसे सिद्ध कर लेता है उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करे।

★★★

तारा की नौ कलाएं

तारा साधना सम्पन्न करने पर भगवती लक्ष्मी से सम्बन्धित निम्न नौ सिद्धियां या नौ कलाएं स्वतः साधक के प्राप्त हो जाती हैं--

१. विभूति -

विभूति का तात्पर्य निरन्तर उन्नति और गरीबों की सहायता करने का गुण स्वतः ही साधक के जीवन में आ जाता है।

२. नम्रता -

ऐसी साधना करने पर यह गुण स्वतः ही आ जाने से व्यक्ति की प्रशंसा होने लगती है।

३. कान्ति -

इससे साधक के चेहरे पर भव्यता और प्रभाव उत्पन्न हो जाता है।

४. तुष्टि -

ऐसा साधक कभी भी अपुत्रवान नहीं रहता और पूर्ण पारिवारिक सुख मिलता है।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

५. कीर्ति -

तारा सिद्ध करने वाले की कीर्ति चारों ओर फैलने लगती है।

६. सिद्धि -

इससे साधक कई विभिन्न साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करता है।

७. पुष्टि -

ऐसा साधक सभी दृष्टियों से पुष्ट, स्वस्थ व उन्नतिप्रद बना रहता है।

८. सृष्टि -

तारा सिद्ध करने पर साधक नवीन सिद्धियों को जन्म देने वाला बन जाता है।

९. ऋद्धि -

साधना पूर्ण होने पर उसके घर में सभी प्रकार से उन्नति होने लगती है, और वह पूर्ण रूप से विद्वान, धनवान और कीर्तिवान बन जाता है।

★★★

भगवती तारा की दुर्लभ साधना विधि

यों तो भगवती तारा की साधना नवरात्रि में या महीने की किसी भी अष्टमी से प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु तारा जयन्ती के अवसर पर यदि इस दुर्लभ साधना प्रयोग को सम्पन्न किया जाय तो साधक के लिए यह महत्वपूर्ण चिन्तन है।

यह साधना अत्यन्त सरल प्रतीत होती हुई भी परम गोपनीय, दुर्लभ और महत्वपूर्ण है। कम पढ़ा- लिखा साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है। न तो यह साधना पेचीदा है, और न इसमें जटिल विधि- विधान ही है, इसके बावजूद भी यह साधना तुरन्त फलप्रद एवं शीघ्र सिद्धिदायक है। हमने स्वयं यह अनुभव किया है, कि स्वामी जी की बताई हुई विधि से यदि इस साधना को

Download Book ~ https://www.hindibook.in

सम्पन्न किया जाता है तो अद्वितीय सिद्धि प्राप्त होती है, और ऐसी साधना सम्पन्न करने वाला सामान्य और गरीब व्यक्ति भी सफलता प्राप्त होने के बाद लाखों-करोड़ों में खेलने लगता है, यही नहीं अपितु इसके अलावा भी कई प्रकार की सिद्धियां स्वतः प्राप्त हो जाती हैं जिसके फलस्वरूप वह पूर्ण सफलता प्राप्त कर जीवन में धन, वैभव, सुख, सौभाग्य और अद्वितीय सिद्धियां प्राप्त करने में समर्थ, सफल हो पाता है।

मेरी राय में जब हमें इतना उच्चकोटि का और अचूक तांत्रोक्त प्रयोग प्राप्त हुआ है, तो हमें इसका अवश्य ही लाभ उठाना चाहिए।

साधना विधि

साधक को चाहिए कि वह जिस दिन भी इस साधना को सम्पन्न करना चाहे, वह चाहे दीपावली का दिन हो, या तारा जयन्ती का अवसर हो, अथवा किसी भी महीने की अष्टमी हो, साधक प्रातःकाल उठकर स्नान कर यह निश्चय कर ले, कि मैं आज पूर्ण रूप से तारा साधना सम्पन्न करूंगा, और भगवती तारा को सिद्ध कर जीवन में वह सब कुछ प्राप्त करूंगा जिसका अभाव मैं अनुभव कर रहा हूं। यही नहीं अपितु इस तारा साधना के द्वारा मैं अपनी जन्म - जन्म की दरिद्रता समाप्त कर सर्वथा

ऋण मुक्त होकर पूर्ण वैभव युक्त जीवन व्यतीत करूंगा।

साधक इस दिन एक समय भोजन करे, भोजन में भी वह सात्विक आहार ले, और ब्रह्मचर्य का पालन करे। यह साधना दिन को या रात्रि को कभी भी सम्पन्न की जा सकती है, और इसमें चार घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता।

तारा यंत्र

यों तो तारा यंत्र कई ग्रन्थों में स्पष्ट किया हुआ है, परन्तु स्वामी जी के अनुसार इस प्रकार के यंत्रों पर तारा सिद्धि सरलता से सम्पन्न नहीं हो पाती। यदि नाथवासर क्रम से तारा यंत्र का निर्माण हो और भूपुर चक्र के द्वारा उसका निर्माण हो, फिर त्रिवृत के अनुसार उसका अंजन कर षोडश दल का निर्माण करे और चतुर्दशार रूप से यंत्र निर्माण कर अष्टार चक्र में भगवती तारा को स्थापित करे।

इस प्रकार की विधि से निर्मित यंत्र सामान्य यंत्र नहीं होता, अपितु सही शब्दों में कहा जाए तो ऐसा यंत्र "यंत्रराज" कहलाता है। ऐसे यंत्र का दर्शन भी अपने- आप में दुर्लभ है। जिसके घर में ऐसा यंत्र स्थापित होता है, उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई

Download Book ~ https://www.hindibook.in

अभाव रह ही कैसे सकता है। वास्तव में ही इस प्रकार से यंत्र का निर्माण और उसका स्थापन अपने- आप में ही महत्वपूर्ण है।

ऐसा यंत्र सोने पर, चांदी पर या ताम्र पत्र पर अंकित कर उसमें समस्त त्रिपुर सुन्दरी सहित ३६० शक्तियों का आह्वान करें, और पूर्ण मंत्र सिद्ध कर उसे प्रभाव युक्त बनावें। ऐसा ही यंत्र साधना में उपयुक्त रहता है, और ऐसे ही यंत्र के द्वारा इस प्रकार की साधना सम्पन्न की जा सकती है।

जिस दिन साधना सम्पन्न करनी हो, उस दिन साधक पूर्व या उत्तर की ओर मुंह कर बैठ जाए, और अपने सामने लाल रेशमी वस्त्र किसी लकड़ी के बाजोट पर बिछा दे, और उस पर पुष्प की पंखुड़ियां बिखेर कर इस यंत्रराज को स्थापित कर दे।

साधना रहस्य

साधक लाल धोती या गुलाबी धोती पहिन कर बैठे, और लाल आसन ही बिछा दे। इसके बाद एक अलग पात्र या थाली को दूसरे बाजोट पर रख कर उसके मध्य में कुंकुम से **"श्री तारायै नमः"** लिखकर उस पर इस यंत्र को स्थापित कर दें, और फिर जल मिश्रित दूध से धीरे

- धीरे जल चढ़ाता हुआ, यंत्र को स्नान करावे। दूध मिश्रित जल चढ़ाते समय निम्न महादेवियों का उच्चारण करे और प्रत्येक नाम के उच्चारण के साथ नमः जोड़ ले।

१. नित्यायै नमः **२.** जगत्मूर्त्यै **३.** देव्यै **४.** भगवत्यै **५.** महा-भार्यायै **६.** प्रसन्नायै **७.** वरदायै **८.** मुक्ति-दायिन्यै **९.** परमायै **१०.** हेतु-भूतायै **११.** हरि-नेत्र-कृतालयायै **१२.** विश्वेश्वर्यै **१३.** जगद्-धात्र्यै **१४.** स्थिति कारिण्यै **१५.** संहार कारिण्यै **१६.** निद्रायै **१७.** भगवत्यै **१८** अतुलायै **१९.** तेजसां निध्ये **२०.** स्वाहायै **२१.** स्वधायै **२२.** वषट्-कारायै **२३.** स्वरात्मने **२४.** सुधायै **२५.** अक्षरायै **२६.** त्रिधामात्रात्मिकायै **२७.** अर्ध-मात्रायै (अर्ध-मात्रा-त्कियै) **२८.** स्वर-स्वरूपिण्यै **२९.** अनुच्चार्यायै, सन्ध्यायै **३०.** सावित्र्यै **३१.** ज़नन्यै **३२.** परायै **३३.** सृष्टि-रूपायै **३४.** जगद्-योन्यै **३५.** दिव्यायै **३६.** कार्ये **३७.** सिद्धये **३८.** वृद्धये **३९.** दिव्यायै **४०.** वर प्रदायै।

इसके बाद साधक उस यंत्र को अलग ले कर भली प्रकार से शुद्ध वस्त्र से पोंछ ले, और दूसरे किसी पात्र के मध्य में **"ह्रीं"** अक्षर अष्टगन्ध से लिख कर उस पर इस यंत्र को स्थापित करे, और फिर पूर्ण श्रद्धा

Download Book ~ https://www.hindibook.in

के साथ अष्टगन्ध से ही इस यंत्र पर निम्न नामों के साथ **"नमः"** शब्द लगाकर चालीस बिन्दियां अष्टगन्ध से लगावे। प्रत्येक बिन्दी लगाते समय निम्न एक नाम का उच्चारण करते हुए ये चालीस बिन्दियां लगावे।

१. इन्दु रूपिण्यै २. सुखायै ३. कल्याण्यै ४. ऋद्ध्यै ५. सिद्ध्यै ६. कूर्मिकायै ७. नैऋत्यै ८. भूभृतां लक्ष्म्यै ९. शर्वाण्यै १०. दुर्गायै ११. दुर्ग-पारायै १२. सारायै १३. सर्व-कारिण्यै १४. क्षान्त्यै १५. कृत्स्नायै १६. धूम्रायै १७. अति सौम्यायै १८. अति-रौद्रिण्यै १९. जगत्-प्रतिष्ठायै २०. कृष्णायै २१. विष्णुमायायै २२. चैतनायै २३. बुद्धि रूपायै २४. निद्रा-रूपायै २५. क्षुधा-रूपायै २६. ज्ञानरूपायै २७. शक्तिरूपायै २८. तृष्णा-रूपायै २९. क्षान्ति-रूपायै ३०. जाति-रूपायै ३१. लज्जा - रूपायै ३२. शान्ति- रूपायै ३३. श्रद्धा-रूपायै ३४. कान्ति-स्वरूपिण्यै ३५. लक्ष्मी-रूपायै ३६. वृत्ति-रूपायै ३७. धृति-रूपायै ३८. स्मृति -रूपायै ३९. दया रूपायै ४०. सृष्टि-रूपायै।

अष्टगन्ध से चालीस बिन्दियां लगाने और इन चालीस महाशक्तियों का पूजन करने के बाद यंत्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक लगावे और धूप या अगरबत्ती प्रज्ज्वलित करें।

फिर यंत्र पर पुष्प समर्पित करे, और पुष्प माला

पहिनाएं, साथ ही यंत्र के सामने घर पर बनाया हुआ प्रसाद समर्पित करें। प्रत्येक नाम के आगे साधक **"नमः"** शब्द को जोड़ कर पुष्प समर्पित करे, इसमें किसी भी प्रकार के पुष्पों का प्रयोग किया जा सकता है।

१. बीज -एवरूपिण्ये २.सम्मोहिन्यै ३. विद्यायै ४. स्वर्ग-प्रदायिन्यै ५. मुक्ति प्रदायिन्यै ६. अशेष-जन- हत्-संस्थायै ७. नारायण्यै ८. शिवायै ९. कलाकाष्ठादि-रूपायै १०. परिणामप्रदायिन्यै ११. सर्वमंगल-मांगल्यै १२. शिवायै १३. सर्वार्थ-साधिकायै १४. शरण्यायै १५. त्रयम्बिकायै १६. गौयै १७. सृष्टयात्मिकायै १८. स्थित्यात्मिकायै १९. लयात्मित्कायै २०. शक्त्यै २१. सनातन्यै २२. गुणाश्रयायै २३. गणमयायै २४. नारायण -स्वरूपिण्यै २५. शरणागत-परित्राण-परायणायै २६. दीन-परित्राण-परायणायै २७. आर्त-परित्राण-परायणायै २८. सर्वस्यार्ति हरायै २९. देव्यै ३०. विष्णु-रूपायै ३१. परात्परायै ३२. हंस-युक्त-विमानस्थायै ३३. ब्रह्माणी-रूप धारिण्यै ३४. कोशाम्भी-धारिण्यै ३५. क्षुरिका-धारिण्यै ३६. शूलधारिण्यै ३७. चन्द्र-धारिण्यै ३८. अहि-धारिण्यै ३९. वर-धारिण्यै ४०. महा-वृषभ-संरूढ़ायै।

इस प्रकार पुष्प समर्पण करने के बाद साधक उसी आसन पर बैठे - बैठे तारा के परम गोपनीय मंत्र की सोलह माला मंत्र जप करें।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

तारा माला

स्वामी जी के अनुसार इस प्रकार की साधना में **विशेष १०८ मनकों से सज्जित तारा माला का ही प्रयोग किया जाना चाहिए,** जिसका प्रत्येक मनका मन्त्र सिद्ध हो, इन मनकों में आठ मनके अष्ट सिद्धि मन्त्रों से, नौ मनके नव निधि सिद्धियों से और ९१ मनके देव सिद्धि मंत्र से आपूरित हों, इस प्रकार प्रत्येक मनका एक विशेष सिद्धि से आपूरित होता है, इसलिए इस प्रकार की माला अत्यन्त सौभाग्यदायक और शीघ्र सिद्धि प्रदायक मानी गई है।

इस माला की सबसे पहले साधक पूजा करे, सुमेरू पर केसर का तिलक करे, और बाद में प्रत्येक मनके पर केसर का तिलक कर उन पर अक्षत और पुष्प समर्पित करे, तत्पश्चात् हाथ में जल ले कर साधक उच्चारण करे कि मैं अमुक गोत्र, अमुक पिता का पुत्र, अमुक नाम का साधक, तारा सिद्धि के लिए मंत्र जप सम्पन्न कर रहा हूं, और यह साधना मैं भगवती तारा को प्रसन्न करने के लिए तथा जीवन में स्वर्ण, भोग, वैभव एवं सौभाग्य प्राप्त करने के लिए सम्पन्न कर रहा हूं, ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल किसी पात्र

में छोड़ दें।

इसके बाद साधक तारा माला से निम्न मंत्र की सोलह माला मन्त्र जाप वहीं बैठे - बैठे सम्पन्न करे।

तारा मन्त्र

ऐं ओं ह्रीं क्रीं हुं फट्

उपरोक्त मंत्र का जप पूरी आस्था और विश्वास के साथ सम्पन्न करें, मन्त्र जप करते समय साधक की दृष्टि सामने रखे हुए यंत्र के मध्य में होनी चाहिए।

मंत्र जप पूरा होने के बाद यदि स्मरण हो तो तारा की अथवा भगवती लक्ष्मी की आरती सम्पन्न करे और घर के सदस्यों को प्रसाद वितरित करें, इसके बाद किसी कुंवारी कन्या को अथवा किसी ब्राह्मण को भोजन सम्पन्न करावे, और उसे यथोचित दान -दक्षिणा दे कर इस साधना की सम्पन्नता अनुभव करें, ऐसा करने पर यह साधना सम्पन्न होती है।

वास्तव में ही यह गोपनीय साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण है, और यह साधना करने से साधक की समस्त कामनाएं पूर्ण होती हैं, वह इस लोक में सभी भोगों को प्राप्त कर अन्त में देवी की सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है।

★★★

Download Book ~ https://www.hindibook.in

तारा साधना मेरे जीवन की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि है

मंत्र और तंत्र अपने - आप में प्रामाणिक विद्याएं हैं और इनके द्वारा जीवन को पूर्णता दी जा सकती है, पत्रिका की प्रेरणा तथा पूज्य गुरुदेव का साहचर्य पाकर कई साधकों ने विभिन्न साधनाएं सिद्ध कीं, और उन्हें सफलताएं मिलीं, समय-समय पर उनके द्वारा सूचनाएं प्राप्त होती रहती हैं, और पत्र मिलते रहते हैं।

उनमें से कुछ चुने हुए व्यक्तियों के अनुभव प्रकाशित कर रहे हैं कि उन्हें साधना के बीच किस प्रकार के अनुभव हुए? ये सभी साधक सामान्य गृहस्थ हैं, और गृहस्थी के बीच रहकर ही उन्होंने साधनाएं सिद्ध की हैं।

इससे यह स्पष्ट है कि प्रभु दर्शन या साधना में, गृहस्थ किसी भी प्रकार से बाधक नहीं हैं, पूर्णता

प्राप्ति में इससे कोई भी व्याघात उत्पन्न नहीं होता।

मैंने छोटी-मोटी तो साधनाएं सिद्ध की थीं, परंतु कई बार असफलता हाथ लगी, और एक - दो बार सफलता भी मिली, परंतु मैंने कई साधकों और योगियों से सुना था, कि भगवती तारा साधना महत्वपूर्ण साधना है, इस साधना को सम्पन्न करने पर महाविद्या तारा स्वयं प्रत्यक्ष दर्शन देती है, और इसके बाद नित्य उसके द्वारा स्वर्ण प्राप्त होता रहता है, पिछले दिनों प्रयाग में जो कुम्भ हुआ था, उसमें स्वामी वेदान्तानंद जी पधारे थे, जो कि तारा महाविद्या के सिद्ध योगी हैं, उनसे भी मैंने जिज्ञासा प्रकट की तो उन्होंने कहा कि तारा सिद्ध करने पर आर्थिक न्यूनता नहीं रहती, बाद में जब मुझे जोधपुर जाने का अवसर मिला तो मैंने पूज्य श्रीमाली जी से भेंट की और मेरी निष्ठा देखकर उन्होंने तारा साधना के गोपनीय रहस्य मुझे समझा दिए, तब मुझे विश्वास हो गया कि जब इतने श्रेष्ठ गृहस्थ योगी का आशीर्वाद मुझे प्राप्त हुआ है, तो अवश्य ही मैं इसमें सफलता प्राप्त कर लूंगा।

मैंने वाममार्गी पद्धति की अपेक्षा सात्विक मंत्रात्मक रूप से महाविद्या तारा सिद्ध करने का निश्चय किया, और नियमानुसार अपने घर के एकान्त कक्ष को

Download Book ~ https://www.hindibook.in

चुन लिया, मैंने पत्नी को बता दिया कि मैं इक्कीस दिन की साधना में बैठ रहा हूं, अतः किसी प्रकार का व्याघात न हो, मैंने कमरे को गुलाबी रंग से पुतवा दिया, इस साधना में धोती या वस्त्र आदि भी गुलाबी रंग में रंगे होने चाहिए, अतः मैंने ऐसी भी व्यवस्था कर ली।

निश्चित विजय मुहूर्त्त में मैंने इस साधना को प्रारम्भ कर दिया, सामने मां तारा का प्रामाणिक चित्र और यंत्र रखा हुआ था, दीपक लग रहा था, और दीपक के इस पार सात ढेरियां बनाकर उस पर प्रसाद रख दिया गया था, मैंने ऊन के आसन पर उत्तराभिमुख होकर मंत्र जप प्रारम्भ कर दिया।

मेरा मंत्र जप बराबर चालू था, नित्य एक सौ एक मालाएं जपनी थीं, और उसमें लगभग आठ से नौ घण्टे लग जाते थे, परंतु मेरा निश्चय अडिग था, अतः मेरे सफल होने की पूरी सम्भावना थी।

मैं विस्तार में नहीं जाना चाहता, परंतु तीसरे रोज से ही मुझे अनुभव होने लग गए थे, ग्यारहवें रोज तो ऐसा लगा जैसे कि कमरे में कोई आया है, और मेरे पास ही बैठा है, अठारहवें दिन का अनुभव तो अत्यन्त विचित्र है, उस दिन मंत्र जप के बीच में ही मां तारा अपने मूल रूप में ही मेरे सामने आकर प्रकट हो

गई थीं, भयानक चेहरा, चारों हाथों में अस्त्र लिए हुए, भुजाओं में सर्प लपेटे हुए तथा गले में नर मुण्डों की माला पहनी हुई, तारा का जैसा ध्यान है, ठीक उसी रूप में मां तारा सामने प्रकट हो गईं -

प्रत्यालीढ़ पदार्पिताङ्घ्रिशवहृद्घोराट्टहासापरा।
खड्गेन्दीवरकर्त्रिखर्पररभुजा हुंकारबीजोद्भवा।
खर्वा नीलविशालपिंगलजटाजूटैकनागैर्युता।
जाड्यन्न्यस्य कपालकर्तृजगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम्।

मेरे हाथ से माला गिरते-गिरते बची, परंतु दूसरे ही क्षण मैं संभल गया, सामने ही मेरे गुरुदेव का चित्र रखा हुआ था, उस चित्र की ओर देखते ही हृदय में साहस का संचार हुआ, और मैं उसी प्रकार मंत्र जप में सचेष्ट रहा, लगभग दस मिनट तक ऐसा ही दृश्य रहा, मां की उपस्थिति कमरे में बराबर अनुभव हो रही थी, मेरी हिम्मत उनकी ओर देखने की नहीं हो रही थी, वह रात्रि निर्विघ्नतापूर्वक निकल गई, इसमें कोई दो राय नहीं कि यदि उस रात्रि को मैं साहस नहीं रखता तो यह साधना अवश्य ही भंग हो गई होती।

इक्कीसवें दिन एक मधुर अनुभव हुआ, जब मैं चौबीसवीं माला फेर रहा था, तो मेरे पास ही एक अत्यन्त सुंदर तेजस्वी युवती आकर बैठ गई, जिसकी आयु

Download Book ~ https://www.hindibook.in

लगभग बीस वर्ष के आस - पास थी, अत्यन्त सुंदर गुलाबी वस्त्र पहिने हुए थे, उसके शरीर से सुगन्ध आती हुई मैं अनवरत रूप से अनुभव कर रहा था, वह आकर बिल्कुल मेरे पास बैठ गई, उसका घुटना मेरे घुटने से स्पर्श कर रहा था, परंतु मैं बड़ी कठिनाई से अपने-आपको नियन्त्रित किए हुए था, जब तक मेरी एक सौ एक माला सम्पन्न नहीं हो गई, तब तक वह इसी प्रकार मेरे पास बैठी रही, और मेरी तरफ ताकती रही, अच्छे से अच्छा संयमी व्यक्ति का संयम भी ऐसी अवस्था में डोल सकता है, परंतु इस बार भी मैंने अपनी दृष्टि गुरु के चित्र पर स्थापित कर दी थी, और मंत्र जप बराबर चालू रखा।

जब मंत्र जप समाप्त हुआ, तो उसने अपना दाहिना हाथ मेरे गले में डाल दिया और बोली मैं तुम्हारी साधना से प्रसन्न हूं, जब भी तुम स्मरण करोगे मैं सौम्य या रौद्र रूप में उपस्थित होऊंगी , और आज से नित्य तुम्हारे सिरहाने दो तोला स्वर्ण प्राप्त होता रहेगा। उस रात्रि को मैं नित्यानुसार बाहर जमीन पर ही सो गया था, जब मैंने प्रातःकाल सिर के नीचे से तकिया हटाया तो वहां शुद्ध दो तोला स्वर्ण पड़ा था, मैंने बाजार में जाकर उसके बारे में जानकारी चाही तो पता लगा कि

वह सौ टंच शुद्ध स्वर्ण है, इसमें किसी भी प्रकार की मिलावट नहीं है। इसके बाद से आज तक मुझे बराबर स्वर्ण प्राप्त होता रहता है, वास्तव में ही भारतीय साधनाएं प्रामाणिक और अचूक हैं।

अब भी मैं नित्य भगवती तारा की सामीप्यता बराबर अनुभव करता हूं, और उनका जो वरदान मुझे प्राप्त है, उससे मेरे जीवन के भौतिक अभाव दूर हो गए हैं, यह मैं पराम्बा तारा की कृपा समझता हूं।

★★★

Download Book ~ https://www.hindibook.in

कलियुग में सर्वोच्च धन प्रदायक साधना

तारा महाविद्या साधना

वैदिक काल से आज तक समस्त ऋषियों, साधुओं और सन्यासियों ने एक स्वर से स्वीकार किया है कि संसार की सर्वोत्कृष्ट साधनाएं महाविद्याएं हैं, इनमें भी तारा महाविद्या की साधना सर्वश्रेष्ठ महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यदायक कही गई है, अन्य साधनाएं तो कभी भी कर सकते हैं, पर तारा साधना तो गुरु के सानिध्य में सीखते हुए पूर्ण न्यास प्रयोग यंत्र-अंकन के साथ सिद्ध करने से जीवन में अद्वितीय धन-लाभ, व्यापार-वृद्धि और घर में स्वर्ण वर्षा सी होने

लगती है।

किसी भी पुष्य नक्षत्र जैसे महत्वपूर्ण अवसर पर आप मनोयोगपूर्वक इस अवसर का लाभ उठाते हुए, तारा साधना सिद्ध कर अपने जीवन की दरिद्रता, कर्ज एवं आर्थिक न्यूनता को समाप्त कर पूरे जीवन को वैभव, सुख एवं आनंद की जगमगाहट से भर दीजिए।

तारा महाविद्या साधना जीवन का सौभाग्य माना गया है, "वशिष्ठ विश्वामित्र" आदि ऋषियों ने भी एक स्वर से स्वीकार किया है कि संसार में लक्ष्मी प्राप्ति से सम्बन्धित सैकड़ों प्रयोग हैं, परंतु तारा प्रयोग साधना जैसी जीवन में अन्यत्र कोई नहीं ।

सर्वव्वागीश्वरो मर्त्यो लोकवश्यो धनेश्वरः रणे द्यूते विवादे च जयस्तस्य भवेद्ध्रुवम् पुत्रपौत्रान्वितो मर्त्यो बिलासी सर्वयोषिताम् शत्रवो दासतां यान्ति सर्व्वेषां वल्लभः सदा तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्व्वाणी वक्त्रे वसेद्ध्रुवम् तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्त्तते

अर्थात् तारा साधना से निश्चय ही व्यक्ति दूसरों को प्रभावित करने वाली शक्ति प्राप्त करता है, उसकी वाणी में ऐसा प्रभाव उत्पन्न हो जाता है कि वह अपनी बातचीत से पूरी दुनिया को वश में करने की सामर्थ्य रखता है, उसकी मुकदमें जुए, घुड़-दौड़, या

Download Book ~ https://www.hindibook.in

अन्य सभी स्थानों पर निश्चय ही विजय होती है, पुत्र, पौत्र होते हैं, घर में इतना अधिक धन आने लगता है कि विलासी जीवन सम्पन्न होने लगता है, सारे शत्रु दास और नौकर की तरह वश में हो जाते हैं, और पारिवारिक ऋण दूर हो कर सुख, शांति बढ़ती है।

उसके घर में स्थायी लक्ष्मी निवास करने लगती है, और उसे समस्त प्रकार की सिद्धियों की प्राप्ति होने से वह समाज में पूर्ण यश, धन, मान, पद, प्रतिष्ठा प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

प्रभाव -

वास्तव में ही शास्त्रों की वाणी मिथ्या नहीं होती, और हमने स्वयं अनुभव किया है कि तारा साधना से, आर्थिक दृष्टि से समस्त प्रकार की परेशानियां दूर हो जाती हैं, रुका हुआ धन आने लगता है, प्रमोशन हो जाता है, यदि बेकार हो तो नौकरी लग जाती है, व्यापार में आश्चर्यजनक वृद्धि होने लगती है, और आकस्मिक धन प्राप्ति होने से वह ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने लगता है।

कुछ साल पहले तारा साधना शिविर लगाया था, और साधकों ने मात्र छः दिनों में ही पूर्णता के साथ साधनाएं सम्पन्न की थीं, बाद में उनमें से अधिकांश

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका पाठकों और भाग लेने वाले साधकों ने स्वीकार किया था कि तारा महाविद्या साधना उनके जीवन का सौभाग्य था, क्योंकि **साधना शिविर में भाग लेने से उनको ज्ञान हुआ कि साधना किस प्रकार से की जाती है, किस प्रकार से न्यास, ध्यान, विनियोग आदि होता है, और किस प्रकार से मंत्र जप सम्पन्न किया जाता है।**

वे सभी भाग लेने वाले साधक गवाह हैं उन्होंने एक स्वर से स्वीकार किया है कि साधना के बाद उनके जीवन का स्तर काफी ऊंचा उठ गया, मनोवांछित पद प्राप्त हो सका, मुकदमे में तुरंत सफलता मिली, और आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्नता प्राप्त हो सकी।

तारा तंत्र में लिखा है --

मघायां श्रवणायां वा रेवत्यांच विशेषतः
पूर्ण सिद्धि भवेत्तस्य तारा साधनां वपुः

अर्थात् यदि नवरात्रि रेवती नक्षत्र से प्रारम्भ हो और उसमें साधक तारा साधना करे तो उसे निश्चय ही पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है, और वह जो कुछ चाहता है, उसमें सफलता मिलती है।

शाक्त-प्रमोद जैसे ग्रंथ में लिखा है --

मीनराशौ गुरौ याते वृश्चिकस्थे शनैश्चरे
तारा सिद्धि भवेत्तस्य सिद्धिर्भवति पूर्णतः

Download Book ~ https://www.hindibook.in

अर्थात् यदि प्रारब्ध वश जीवन में नवरात्रि के दिनों में गुरु मीन राशि और शनि वृश्चिक राशि में हो, और यदि ऐसे समय में तारा साधना सिद्ध की जाए तो निश्चय ही उसे पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है और वह जीवन में आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सफलता प्राप्त कर पाता है।

वास्तव में ही नवरात्रि पर्व तारा साधना के लिए तो सर्वश्रेष्ठ है ही, और उच्चकोटि के योगी और साधक प्रतीक्षा रत रहते हैं कि वे ऐसे शुभ योगों से सम्पन्न नवरात्रि में तारा साधना सम्पन्न कर पूर्ण सिद्धि प्राप्त कर सकें।

प्रतीक्षा : पुष्य नक्षत्र का

गोपनीय रहस्य तारा सिद्धि का

कोई भी साधना इतनी आसान नहीं होती, जितनी कि दिखाई देती है, प्रत्येक साधना की कुछ गुप्त कुंजियां और रहस्य होते हैं, जिनका प्रयोग करने पर ही साधना में सिद्धि मिलती है, और फिर तारा तो महाविद्या है, और संसार की दस महाविद्याओं में तारा का स्थान सर्वोपरि है, कहते हैं कि जो अपने साधक जीवन में तारा महाविद्या सिद्ध कर लेता है, तो बाकी नौ महाविद्याएं तो स्वतः हीं सिद्ध हो जाती हैं।

यह साधना घर पर बैठकर शायद ही सिद्ध हो क्योंकि कुछ ऐसी क्रियाएं और रहस्य होते हैं, जो अनुभवी गुरु ही समझा सकते हैं, सिखा सकते हैं, सम्पन्न करा सकते हैं, जिस प्रकार घर में बैठ कर तैरना नहीं सीखा जा सकता, उसके लिए तो तैराक के साथ नदी या तालाब में उतरना ही पड़ता है, उसी प्रकार तारा सिद्धि भी घर पर सफलतापूर्वक सम्पन्न नहीं हो सकती, इसके लिए भी गुरु चरणों में बैठकर इस साधना को पूर्ण क्रियाओं के साथ सम्पन्न करने पर ही सिद्धि प्राप्त होती है।

तारा साधना सिद्धि के आठ गोपनीय रहस्य हैं, जिनको सीखकर इनका प्रयोग करके ही तारा सिद्धि साफल्य पाया जा सकता है, वे आठ रहस्य हैं -

१. तारा मुद्राएं --

तारा सिद्धि के लिए मुद्राओं को सीखकर उनका प्रयोग अनुष्ठान में नित्य सम्पन्न होता है।

२. तारा मंत्र --

कीलन-उत्कीलन-तारा मंत्र भगवान शिव से कीलित है, तथा बंधा है, और बंधे हुए मंत्र के जप करने से सफलता सम्भव नहीं होती, इसका 'उत्कीलन' अर्थात्

Download Book ~ https://www.hindibook.in

बंधे हुए मंत्र को खोल देने की क्रिया सीख कर तब मंत्र जप सम्पन्न करने से सफलता प्राप्त होती है।

३. तारा मंत्र बीज --

तारा मंत्र के प्रत्येक बीज को समझने की जरूरत है, और उसको समझकर फिर प्रयोग किया जाए तभी सफलता प्राप्त होती है।

४. तारा सपर्या --

तारा का एक विशेष सपर्या प्रयोग है, जिसके सम्पन्न करने पर ही तारा महाविद्या का साधक से पारस्परिक सम्बन्ध बनता है, और ऐसा बनने पर ही उसे सिद्धि प्राप्त होती है।

५. न्यास, विनियोग --

विनियोग के सम्पन्न करने से अनुष्ठान क्रिया प्रारम्भ होती है, और न्यास के द्वारा महाविद्या का तेजस्वी स्वरूप अपने शरीर में समाहित होता है, जिससे उसे सिद्धि एवं सफलता प्राप्त हो पाती है।

६. आत्म-सामीप्यकरण --

तारा यंत्र अपने- आप में पेचीदा है, मगर तारा महाविद्या की अवस्थिति तो तारा यंत्र में ही होती है, और फिर साधक एक विशेष क्रिया के द्वारा उस यंत्र

का अपनी आत्म-साधना से सम्बन्ध स्थापित करता है, यह क्रिया पेचीदा है पर आवश्यक है। इसे गुरु ही सम्पन्न करवा सकता है, ऐसा करने पर ही सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

७. तारा यंत्र लेखन --

तारा सिद्धि के लिए एक विशेष तरीके से अष्टगंध के द्वारा यंत्र लेखन सम्पन्न किया जाता है, और ऐसा होने पर ही उसे साधक को पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है।

लिखित्वा धारयेद्यस्तु कण्ठे वा मस्तके भुजे
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद्यद्यन्मनसि वर्तते

८. तारा मंत्र, जप, पूजन, अर्चन आदि --

और आवश्यक होता है, मंत्र का शुद्ध उच्चारण, मंत्र का प्रयोग और मंत्र की सम्पूर्ण पूजन पद्धति।

यह सब व्यक्तिगत रूप से बिना ज्ञान के सम्पन्न नहीं हो सकता, इसलिए अनुभवी गुरु की नितान्त आवश्यकता होती है, और वही इन क्रियाओं को सम्पन्न कराकर साधक को सिद्धि की ओर अग्रसर कर सकता है।

Download Book ~ https://www.hindibook.in

आप सिद्धि प्राप्त कर सकते हैं

आप चाहे प्रारम्भिक साधक हों या इस क्षेत्र में सर्वथा नए हों तब भी हिचकिचाहट या चिन्ता की जरूरत नहीं है, जिस प्रकार से अनाड़ी से अनाड़ी व्यक्ति भी कुशल तैराक के हाथों प्रयत्न कर अच्छा तैराक बन सकता है, उसी प्रकार अच्छे गुरु के निर्देशन में अनाड़ी से अनाड़ी व्यक्ति भी साधना सम्पन्न कर सिद्धि प्राप्त कर सकता है, यह अवसर सफलता प्राप्त करने का है, यह अवसर है, इतने श्रेष्ठ मुहूर्त और नवरात्रि के प्रयोग का, और यह अवसर है, अपने जीवन की समस्याओं को दूर कर पूर्ण सफलता प्राप्त करने का।

यह हो सकता है, कि आप व्यस्त हों, काम-धन्धा हों, पर यदि आप हिम्मत के साथ निश्चय कर आगे कदम बढ़ा लेते हैं, तो निश्चय ही ऐसी महत्वपूर्ण साधना सम्पन्न कर सकेंगे।

★★★

जीवन को पूर्णता तक ले जाने में समर्थ हैं ये प्रामाणिक पुस्तकें

१. गुरु सूत्र	२०/-
२. निखिलेश्वरानन्द रहस्य	३०/-
३. मुहूर्त ज्योतिष	३०/-
४. हिमालय का सिद्ध योगी	३५/-
५. स्वर्ण तंत्रम्	३०/-
६. भौतिक सफलता साधना एवं सिद्धियां	३०/-
७. लक्ष्मी प्राप्ति के दुर्लभ प्रयोग	३०/-
८. महालक्ष्मी, सिद्धि एवं साधना	३०/-
९. विश्व की अलौकिक साधनाएं	३०/-

अपने निकटतम बुक स्टॉल से खरीदे

न मिलने पर लिखें

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन-०२९१-३२२०९

Download Book ~ https://www.hindibook.in

आध्यात्मिकता के पथ पर बढ़ते चरण

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

प्रति माह पढ़िए

- साधना ज्ञान में रोचकता की त्रिवेणी: अनूठी साधनाएं
- आकस्मिक धन प्राप्ति
- सम्मोहन • रोग निवारण
- ऋण मुक्ति • पौरुष प्राप्ति
- आयुर्वेद • ज्योतिष द्वारा समस्या निवारण

साथ ही प्रत्येक वार्षिक सदस्य को उपहार में देते हैं कोई एक दुर्लभ यंत्र... सर्वथा निःशुल्क ; उसके घर में या व्यापार स्थल में स्थापित होने योग्य

नोट - पत्रिका का वार्षिक सदस्यता शुल्क १५०/- डाक व्यय १८/- अतिरिक्त, चेक स्वीकार्य नहीं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.), फोन-०२९१-३२२०९

संरक्षक : डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली

Download Book ~ https://www.hindibook.in